ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 4, Issue 11, November 2014 Impact Factor 3.849 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

वागड़ प्रदेश का अध्ययन : ऐतिहासिक भूगोल के संदर्भ में

डॉ. कल्याणमल सिंगाड़ा, सहआचार्य भूगोल
एवं विभागाध्यक्ष, भूगोल विभाग
श्री गोविन्द गुरू राजकीय महाविद्यालय, बांसवाड़ा

राजस्थान का इतिहास भारत और विश्व के सबसे प्राचीनतम इतिहासों में से है। राजस्थान के इतिहास की जानकारी हमें अंग्रेज लेखक कर्नल टॉड़, श्यामलदास, रायबाहदुर हीराचंद गोरीशंकर औझा जगदीशसिंह, मुहणोत नैणसी, सूर्यमल मिश्रण, मुंशी देवीप्रसाद, डॉ. दशरथ शर्मा, विजयदान देथा, यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द' रामनाथ रतनु आदि विद्ववानों ने महत्वपूर्ण ग्रन्थों की रचना की है। साथ ही साथ राजस्थान के भूगोल पर भी कई ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं जैसे डॉ हरिमोहन सक्सेना (1944), प्रो. वी.सी. मिश्रा, डॉ. रामलोचन सिंह, प्रो. तिवारी, प्रो. एच. एस. शर्मा, तेज सिंह, डॉ. राजकुमार शर्मा, डॉ. लोड़ा एवं माहेश्वरी आदि। राजस्थान के इतिहासकारों ने अपने एतिहासिक ग्रन्थों में भूगोल की जानकारी प्रदान की है उसी तरह से भूगोल वेत्ताओं ने भी इतिहास को जानकारी प्रदान करना उचित समझा है। दानों ही तरह के विद्ववानों ने यह प्रयत्न नहीं किया कि ये दोनों विषय एक दूसरे से कितने प्रभावित रहे हैं। इतिहासकार के राज्य प्रत्येक क्षेत्र के लिए तुलना कर अपने आपको गोरवान्वित करते हैं। लेकिन युद्ध क्षेत्र के निर्माण में भौगोलिक कारकों का सर्वाधिक योगदान रहता है। किसी राजा की विजय और पराजय उस क्षेत्र के भौगोलिक कारकों पर ही निर्भर करती है। यह जानकारी दोनों तरफ के विद्धान प्रदान नहीं करते हैं। इस शोध पत्र में विगत 2500 वर्षों के इतिहास पर भूगोल के किन कारकों का प्रभाव रहा को प्रस्तुत किया गया है।

किसी भी प्रदेश के इतिहास का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने के लिए उसके भौगोलिक पर्यावरण की जानकारी आवश्यक है। वागड़ प्रदेश के मानव का भौगोलिक वातावरण जल, जमीन, जंगल से घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है। यहाँ घटित घटनाओं का विवरण एवं उनका मूल्यांकन ही ऐतिहासिक भूगोल है।''पीटर हेलियन (1960) में लिखा है'' इतिहास भूगोल के बिना मृत प्रायः है। जिसमें न तो जीवन है और न गति ही। भूगोल में बिना इतिहास के

जीवन और गति तो होती है लेकिन वह अनिश्चित और अस्थायी होती है। श्री एम. पाण्ड़ेय ने अपने ग्रन्थ हिस्टोरिकल ज्याग्राफी ऑफ बिहार में लिखा है '' इतिहास की मानवीय घटनाओं का स्वरूप देने में भूगोल का हाथ सदैव रहा है।'' अर्थात नदी नाले, सागर, पहाड़, पर्वत, रेगिस्तान, उपजें जलवायु आदि अनेक भौगोलिक दशाएँ तथा तत्व किसी देश के इतिहास को प्रभावित करते हैं। डॉ. के. एम. मुंशी ने अपने ग्रन्थ हिस्ट्री एण्ड कल्चर ऑफ इण्डियन पिपुल में बताया कि ''इतिहास की परिभाषा यह है कि वह एक मनुष्य का दूसरे मनुष्य के बीच व्यवहार और मानव समुहों के पारसपरिक कार्य का सन्तुलन है।'' उपरोक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि वागड़ प्रदेश के इतिहास के गहन अध्ययन के लिये भूगोल का अध्ययन आवश्यक है। वागड़ के प्राचीनतम इतिहास में यहाँ निवासरत जनजातियों का प्रभाव स्पष्ट दिखायी पढ़ता है। वागड़ प्रदेश की राजनीतिक सीमाएँ और उसके सुरक्षा स्थल के रूप में यहाँ के दूर्ग और किले। यहाँ निवासरत बहुसंख्यक आदिवासी और उनके आथिक तथा सांस्कृतिक क्रियाकलाप पर यहाँ की प्राकृतिक स्थिति, जलवायु, वनस्पतियाँ, नदियाँ, मिट्टियों, वन्य जीवों और बिमारियों का प्रभाव स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है।

इतिहास के परिपेक्ष में वागड़

वागड़ प्रदेश कर्क रेखा के उपर फैला हुआ है। यहाँ की प्राकृतिक बनावट, जलवायु की विशिष्टता, सांस्कृतिक एकता और आर्थिक क्रियाकलापों में समानता वाला यह प्रदेश राजस्थान के दक्षिण में 2000 वर्षों पुराने इतिहास में सीमान्त राज्य के रूप में रहा है। इस प्रदेश का अस्तित्व पड़ोसी शक्तिशाली सम्राटों की अधिनता स्वीकार करने, सन्धि, उनके साथ दुश्मनी और विरोध को दबाकर रखने के लिए निर्भर करता रहा है। यही कारण है कि ईसा की पहली से चौथी शताब्दि तक क्षत्रिय साम्राज्य का पश्चिमी भाग रहा है। चौथी से 10 वीं शताब्दि में गुप्तों, हुणों, कन्नोज के वैस वंशी राजा हर्ष और कन्नौज के प्रतिहार शासकों का राज्य रहा है। ग्यारवहवीं और बारहवीं शताब्दि के उत्तर्राद्ध तक मालवा के परमारों और गुजरात के सोलंकियों का आधिपत्य रहा है। जिन्होनें अर्थुना और बड़ौदा को अपनी राजधानियाँ बनाया।

राजस्थान के बांसवाड़ा जिले में स्थित अरथुना में 11 वीं, 12 वीं और 15 वीं सदी से जुड़े नष्ट मन्दिरों के लिए जाना जाता है। 11 वीं शताब्दी में यह वागड़ प्रदेश में परमार शासकों की राजधानी थी। मालवा के परमार वंश के राजा पुण्डरीक ने प्राचीन अमरावती नगरी या उत्थुनक (अर्थूना) की स्थापना की थी। ईसा की 12 वीं शताब्दि से 30 अप्रैल 1948 तक सम्पूर्ण वागड़ प्रदेश डूँगपुर, बाँसवाड़ा, कुशलगढ़ रियासतों के रूप में मेवाड़ के गुहील वंशी शासकों के अधिकार में रहा। सन् 1178 ई. में सामंसिंह ने वागड़ में गुड़िलवंश की स्थापना की और वद्रपटक (बड़ौदा) को अपनी राजधानी बनाया जो ईसवी सन् 1178 से 1358 तक रही। बाद में डूँगपरपुर (1358 से 1948 तक) और बाँसवाड़ा (1518 से 1948) को अपनी राजधानियाँ बनाया। महारावल उदयसिंह जी महाराणा सांगा की ओर से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। उन्होंने ने अपनी मृत्यु से पहले ही रानी सोनगिरी पन्ना कंवर से उत्पन्न पृथ्वीराज को डूँगरपुर एवं रानी राज कुंवरी से उत्पन्न जगमाल को बाँसवाड़ा राज्य के रूप में बँटवारा कर दिया गया था। जमनालाल दशोरा ने मेवाड़ राज्य का ऐतिहासिक भूगोल, 'भूमा' राजस्थान विद्यापीठ (1973) एवं गो.ही. ओझा ने डूँगरपुर, बाँसवाड़ा राज्य के इतिहास में वागड़ प्रदेश का वर्णन किया है।

वागड़ प्रदेश का इतिहास और भौगोलिक पर्यावरण

वागड़ की भूमि में ऐसा कोई फूल नहीं उगा जो राष्ट्रीय वीरता और त्याग की सुगन्ध से भरकर न झुमा हो, वायु का एक भी झोंका ऐसा नहीं उठा जिसका झंझा के साथ युद्ध दवी के चरणों में साहसी युवकों का प्रस्थान न हुआ हो। (जेम्स टॉड)

सामाजिक विकास के प्रारंभिक स्तर पर प्रागेतिहासिक मानव के इतिहास का स्वरूप ज्यादा इस पर निर्भर था कि वह किस प्रकार वहाँ तत्कालीन पर्यावरण के साथ परस्पर सम्पर्क करता था बिना भूगोल के इतिहास अधूरा रहता है और अपने प्रमुख तत्व से वंचित रहता है। यहीं कारण है कि इतिहास को मानव जाति के इतिहास और पर्यावरण का इतिहास दोनों ही परस्पर एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। मिट्टी, वर्षा, वनस्पति, जलवायु और पर्यावरण मानव संस्कृति के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यहाँ के वातावरण

का प्रभाव लोगों के जीवन से इतना गहरा रहा है कि 20 वीं शताब्दि के अन्त तक भी यहाँ आपाधापी और जंगल के कानून का प्रभुत्व रहा है।

स्थिति :–

वागड़ प्रदेश (डूँगपुर, बांसवाड़ा) $23^0 3'$ से $24^0 1'$ उत्तरी अक्षांश तथा $73^0 22'$ से $74^0 47'$ पूर्वी देशान्तर के बीच 7362 वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल में फैला हुआ है। इस क्षेत्र के पूर्व में प्रतापगढ़ जिला (प्रतापगढ़ रियासत), कांठल प्रदेश और मध्यप्रदेश का रतलाम जिला (रतलाम और सैलाना रियासतों) दक्षिण में गुजरात राज्य (माही कांठा, रेवा कांठा, बनास कांठा या ईडर रियासतों) पश्चिम में गुजरात राज्य का (साबर कांठा और बनास कांठ) उत्तर मे उदयपुर जिले (मेवाड़ रियासत, भोमट, छप्पन और मेवल के क्षेत्र) की खेरवाड़ा, सराड़ा और सलुम्बर, तहसीलें हैं। प्राकृतिक दृष्टि से सम्पूर्ण वागड़ प्रदेश पहाड़ी और उबड़–खाबड धरातल है। आदिकाल से ही यह प्रदेश आदिवासी (जनजाति बाहुल्य) भीलों डामोरों, और गरासियों का निवास स्थल रहा है। ईसा की पहली शताब्दि से ही साम्राज्य विस्तार की भावना वाले क्षत्रियों और राजपूतों ने इस प्रदेश पर अपना राजनैतिक वर्चस्व बढ़ाकर सांस्कृतिक दृष्टि से पिछड़े हुए अस्थायी, आर्थिक दृष्टि से स्थानान्तरित और राजनैतिक दृष्टि से असंगठित भीलों और गरासियों को सदैव दबाकर, कुचलकर, गुलाम बनाकर ही रखा। जबकि उनकी जनसंख्या राजपूतों और सर्वत्र जातियों से 5 गुना से भी अधिक रही है।

धरातल –

यहाँ के धरातल सामान्य भूविज्ञान संभावित चट्टानें अरावली सुपर ग्रुप ऑफ रांक में फाइलाइट, अभ्रक, शिष्ट, डोलोमाइट और क्वार्टजाइट के साथ सामान्य चट्टान के प्रकार का एक क्षेत्र चुना कंकर के बेड के रूप में पाये जाते हैं। यहाँ क्रिटेशियस यूगिन शैले भी पाई जाती है।

भूवैज्ञानिक दृष्टि से इस क्षेत्र में फिलाइट्स, शिष्ट, डोलोमाइट और क्वार्टजाइट, ग्रेनाइट व नीस तथा अरावली सुपर ग्रुप के लाइम, एसिड इंट्रुसिवोस और बेसाल्ट हैं जो क्षेत्र के पूर्वी भाग में क्रिटेशियस यूगिन हैं। क्षेत्र में सबसे ऊँचा अल्टीट्यूड टी.आई 358

कालिया के निकट है। राजस्थान का यह दक्षिणी पहाड़ी प्रदेश पुरानी कठोर चट्टाने अरावली पहाड़ियों को द.प. से उत्तर पूर्व की ओर फैली समानान्तर श्रेणियों से घिरा हुआ है। द.प. में इसकी ऊँचाई 550 मीटर (रमणा की पहाड़ी) और पूर्व में कुशलगढ़ के समीप कचूमर की 600 मीटर ऊँची पहाड़ी है। इन पहाड़ियों पर विगत 2000 वर्षों में किसी, किलों या दूर्ग का निर्माण नहीं हुआ है। इन पर्वतों के बीच वनाच्छादित दुर्गम घाटियाँ ही इस प्रदेश पर होने वाले शत्रुओं के आक्रमणों से शासकों की सुरक्षा एक सुदृढ़ दुर्ग की तरह करती रही है। यह पहाड़ियाँ वालरा कृषि एवं बिखरी बस्तियों के लिए जिम्मेदार रही है।

जलाशय और प्रवाह प्रणाली–

इस क्षेत्र में अनेक छोटे–छोटे नाले हैं। जो भूमि को विभाजित करते हैं। इस सम्पूर्ण प्रदेश का ढाल दक्षिण पश्चिम की ओर है। इस सम्पूर्ण क्षेत्र की नदियों का पानी माही और उसकी सहायक नदियों में अनास, सोम, हीरन, एरी, चाप, भादर, मोरेन, पश्चिम की ओर बहकर सम्भात की खाड़ी में गिर जाती है। माही नित्यवाहिनी है जो माही सागर के रूप में भी जानी जाती है। इस नदी पर कडाणा बाँध, माही बांध, गेमन पूल, लिलवानी डेम हजारों वर्षों से सामंती शासक, विदेशी आक्रमणों, अशिक्षा, सीमित आर्थिक संसाधन और यातायात के साधनों के अभाव में ये नदियाँ बाढ़ और विनाश का कारण बनने के साथ–साथ आवागमन और विकास में बाधा बनती रही है।

वागड़ प्रदेश में माही और सोम नदियों का बड़ा महत्व रहा है। ये दोनों नदियाँ बाँसवाड़ा और डूँगरपुर के बीच में बहती है। यह 300 वर्षों से रियासतों के मध्य सीमा का कार्य करती आ रही है। सोम नदी उदयपुर (मेवाड़) और डूँगरपुर जिले के बीच 1400 वर्षों से सीमा का कार्य कर रही है। जबकि जाखम नदी चितौड़गढ़ और प्रतापगढ़ के मध्य सीमा का कार्य करती है। वागड़ के इतिहास में इन नदियों का महत्वपूर्ण स्थान है क्योंकि इन्हीं नदियों के किनारों पर मेवाड़ और वागड़ (डूँगरपुर, बांसवाड़ा) शासकों के मध्य निर्णायक युद्ध हुए हैं। माही, सोम जाखम के संगम पर तीनों राज्यों गुजरात, मध्यप्रदेश आर राजस्थान का बैणेश्वर धाम स्थित है। जो महत्व हरिद्वार का है वहीं महत्व इस जनजाति बहुल्य क्षेत्र में इस त्रिवेणी धाम का है। इन नदियों के किनारों पर देव सोमनाथ,

वोरेश्वर तथा गलियाकोट आदि तीर्थ स्थल हैं। इस क्षेत्र में विशेषकर बैणेश्वर धाम और घाटिया आम्बा के मेलों ने समय–समय पर वागड़ प्रदेश के एकाकीपन के तोड़ा है।

इस प्रदेश में कई जागीरदार, ठीकानेदार, और सामंतों ने आर्थिक, राजनैतिक तथा प्राकृतिक सुगमता तथा अपने आमोद प्रमोद के लिए कई जलाशय बनाये। पूंजपुर के पास पूंजेला झील डूँगरपुर के पास गेप सागर, डूँगरपुर से 13 कि.मी. दूर एडवर्ड समुद्र, चुड़ावाड़ा झील, बांसवाड़ा जिले में बाई का तालाब, कलिंजरा, अर्थूना, मेतवाला, घाटोल, गनोड़ा, बजवाना, बागीदौरा, तलवाड़ा और नौगामा के तालाब। वर्तमान में माही बाँध में सम्पूर्ण वागड़ प्रदेश में कायापलट कर दी है। भूखिया (अन्नदपुरी) क्षेत्र आज सरसब्ज हो गया है। कुशलगढ़ में भी माही से पेयजल उपलब्ध हो गया है।

आजादी के बाद माही बांध इस क्षेत्र के राजनीतिक प्रयासों की उपलब्धि है। इन बाँधों और जलाथलों से पेयजल, जलविधुत, यातायात और उद्योगों के लिए जल उपलब्ध हो रहा है।

वागड़ प्रदेश के इतिहास पर जलवायु का प्रभाव

वागड़ प्रदेश निम्न से मध्यम तापमान वाला क्षेत्र है। अधिकतम तापमान 45 डिग्री सेल्सियस तक बढ जाता है जबकि न्यूनतम तापमान 6 डीग्री सेल्सियस तक गिर जाता है। मई और जून में सर्वाधिक तापमान होता है जबकि दिसम्बर और जनवरी वर्ष का सबसे ठण्डा महीना होता है। अधिकतम वार्षिक वर्षा 900 से 1100 मिमी के बीच होती है। वागड़ प्रदेश उष्ण कटिबन्धीय क्षेत्र में बसा हुआ है। यह राजस्थान में सर्वाधिक वर्षा (100 से मी.) वाला क्षेत्र है। इस कारण यहाँ अकाल की स्थिति कभी–कभी आती है। उच्च तापक्रम और उच्च आद्रता के कारण इस क्षेत्र में मलेरिया, चमड़ी के रोग, आँखों की बिमारियाँ, दस्त, हेजा, नजला, निमोनिया, मोतीझरा आदि मुख्य बिमारियाँ हो जाती है।

अधिक वर्षा से वनाच्छादित होने के कारण इस प्रदेश के अधिकांश भीतरी भागों में जून से अक्टूबर तक बाधित रहने के कारण स्वास्थ्य सेवाओं में रूकावट आती है। यही कारण था कि वागड़ प्रदेश में किसी भी बाहरी शक्ति को आक्रमण का साहस नहीं हुआ।

अधिकांश आक्रमण सर्दियों या गर्मी की ऋतुओं में ही हुए (गोरी शंकर ओझा – डूँगरपुर बांसवाड़ा का इतिहास)

वनस्पति और जीवधारी

वागड़ प्रदेश की वनस्पति यहाँ निवासरत भीलों की जीवन रेखा है। ऊँची नीची मगरियाँ उनके बीच आम और महुआ के वृक्ष अधिक पाये जाते हैं। इस प्रदेश में खेजड़ा और खाखरा अनुपयोगी वृक्ष है। पूर्वी और दक्षिण पूर्वी भागों में सागवान, शीशम, आम, कदम, महुआ, धामण, टीमरू, बरगद, पीपल, चन्दन, नीम, खैर, बैर, पलाश (खाखरा) खेजड़ा बबूल, हलदू, हालेड़ा, हिमेल के वृक्ष पाये जाते हैं। भील जनजाति के लोगों में महुआ का वृक्ष बहुत अधिक उपयोगी है जैसे फूल का मिठा रस पीते हैं। इसी फूल को सुखाकर तिल, मुगफली और चने के साथ सिकाई कर लड्डू बनाकर भोजन के रूप में प्रयोग करते हैं जो अत्यधिक पोश्टिक और उर्जा प्रदान करता है।

महुआ के फूलों से शराब भी बनाई जाती है। महुआ के बीज से खल पथुओं को खिलाने तथा सर्प आदि जहरीले जन्तुओं को भगाने के लिए जलाई जाती है। इसके बीज से तेल निकलता है जिसे आदिवासी भोजन के रूप में प्रयोग करते हैं। इस वृक्ष की लकड़ी से आदिवासी अपना घर बनात हैं। वन विभाग द्वारा इन वनों का संरक्षण कर सागवान, शीशम, हलदु और बांस के पेड़ उगाकर उपयोगी बना रहे हैं।

आदिवासी और वन एक दूसरे के पर्यायवाची हैं। वन आदिवासियों के लिए शरण स्थल ही नहीं बल्कि अकाल और युद्धकाल में भोजन और शिकार इन वनों से पाप्त करके अपना जीवन यापन करते रहे हैं। इसके अलावा मकान बनाने, जलाने के लिए लकड़ी भी इन्हें वनों से ही प्राप्त होती रही है। जो आज भी इनकी जीविका का साधन और आदिवासी अर्थव्यवस्था की प्रतीक बनी हुई है।

वन्यजीव

वागड़ प्रदेश का उबड़–खाबड़ धरातल आदिवासियों और वन्य प्राणियों के अधिवास रहे हैं। बड़ती हुई जनसंख्या ने वनों के सफाये के साथ–साथ वन्य प्राणियों का शिकार

कर समाप्त कर दिये गये हैं। जब भी इस प्रदेश पर आक्रमण हुए हैं और अकाल के समय आदिवासियों को भोजन देने वाले रहें हैं।

आजादी के बाद प्रदेश का आतंक और क्रूरतापूर्ण सामंती इतिहास ही बदल गया सिंचाई और यातायात के साधनों के बड़ने तथा शिक्षा प्रसार के कारण आदिवासियों की हजारों वर्षों की आदिम संस्कृति में परिवर्तन आ रहा है। लेकिन ये वन्य प्राणी समाप्त प्रायः हो गये हैं।

वागड़ की जनसंख्या और इतिहास

वागड़ प्रदेश में आदिवासी जनसंख्या का प्रभुत्व (80%) के लगभग प्रतित होती है। इनमें भील, डामोर, गरसिया, मुख्य हैं। इनके अलावा ब्राह्मण, राजपूत, वैश्य, मुसलमान, नाई, धोबी, दर्जी, लुहार, कलाल आदि नगरों या बड़े गाँवों में निवास करते हैं।

कुल जन संख्या	डूँगरपुर	1388552	घनत्व	368
	बांसवाड़ा	1797485	घनत्व	397
आदिवासी जनसंख्या	डूँगरपुर	9371986		
	बांसवाड़ा	1372999397		

भारत सरकार – जनगणना रिपोर्ट 2011

आदिवासियों के अलावा अन्य सभी जातियों और धर्म के लोग बाद में राजसत्ता के साथ जुड़े हुए होने के कारण आकर बस गये हैं। जिससे उनकी जनसंख्या बड़ने लगी है। इस प्रदेश में प्रारम्भ से ही राजपूतों और आदिवासियों का संघर्ष चलता रहा है। लेकिन राजपूतों ने क्रूरता और आतंक से आदिवासियों की स्वतंत्रता को सदैव कुचला, उन्हें सदैव आर्थिक दृष्टि से पिछड़ा हुआ एकाकी और दास बनाकर रखा। राजनीतिक दृष्टि से 95% लोगों पर अफ्रीकी देशों की तरह 5% राजपूतों का शासन और स्वर्ण लोगों का प्रभुत्व रहा है। इन लोगों ने सदैव उन निरीह आदिवासियों का शोषण और विनाश ही किया। इसलिए सम्पूर्ण क्षेत्र में दो तरह की सांस्कृतिक धाराएँ हजारों वर्षों से चली आ रही है और आज

भी विद्यमान है। इतने लम्बे संघर्ष काल में आदिवासियों को कभी भी सत्ताने या अन्य वर्गों ने नौकरियाँ, सागड़ी या उनकी महिलाओं को दासियाँ, पासवाने बनाकर रखने के और कोई स्थान नहीं दिया। वागड़ प्रदेश के आदिवासियों को सामाजिक और राजनैतिक महत्व मेवाड़ राज्य में या जयपुर राज्य में था वैसा कभी भी नहीं प्राप्त हुआ न तो उनके द्वारा राजतिलक ही होता था और न उन्हें राज्यचित्र में ही अंकित किया गया न उन्हें किसी भी प्रकार की जागीरियाँ दी गई और न उन्हें किसी प्रकार की पदवी या जिम्मेदार राजकीय पद पर नियुक्तियाँ ही दी गई। यही नहीं उन्हें शिक्षा, चिकित्सा, आवास और रोजगार सम्बन्धी सुविधाओं से भी सदैव वंचित रखा बल्कि गुलाम और द्वितीय श्रेणी को कौनसी सुविधाएँ हो यही रवैया आज तक बना हुआ है। आदिवासी आज भी अपने फलों, पालों, गुड़ों, पुरों आदि में बिखरे हुए हैं। नगरों और कस्बों में इनकी आबादी 5% से अधिक नहीं है बल्कि दिन में मजदूरी करने या वन्य तथा कृषि उत्पादन बेचने और आवश्यक सामग्री खरीदने हेतु ही सभ्य संसार के सम्पर्क में नगरों या गाँवों में आते हैं। दूसरी जातियों के लोग जो भीलों से उन्नत संस्कृति वाले होने से इनके शोषक और शासक हो रहे हैं। उन्होंने भीलों को मारा, कुचला ही नहीं बल्कि दास बनाकर रखा। ये राजपूत कस्बों बड़े गाँवों और अपनी जागीरियों के मुखिया बने रहे। इनके साथ आये ब्राह्मण बनिये सांस्कृतिक शोषक का काम पुरोहितायी और व्यापार करने की दृष्टि से आ कर बसते रहे हैं। इनके अलावा अन्य जाति और धर्मों के लोग प्रशासन, सेवा, धर्म प्रचार और शिक्षा प्रचार की दृष्टि से आये और यहीं गाँवों और कस्बों में बस गये।

सांस्कृतिक दृष्टि से पिछड़े हुए, आर्थिक दृष्टि से उन्नत वागड़ प्रदेश में कोई बड़ा नगर है ही नहीं। डूँगरपुर और बांसवाड़ा जो पुरानी रियासतों की राजधानियाँ और जिला कार्यालय होने से कस्बे का रूप ले पाये हैं। अन्य कस्बे आसपुर, बागीदौरा, कुशलगढ़, गढ़ी, गलिया कोट, साबला, सिमलवाड़ा, बोरीगामा, पीपलखूंट, बनकोड़ा, साबला, सिमलवाड़ा, बोरीगामा, पीपलखूंट, बनकोड़ा, अर्थुना, बड़ौदिया आदि पुराने नगर या तहसील कार्यालय या पुरानी जागीरें या तीर्थ स्थल या मार्गों पर स्थित होने से इनकी जनसंख्या बड़ गयी है। अब सरकार का ध्यान इस प्रदेश के खनिज संसाधनों, वनों और कृषि उत्पादन पर लगा हुआ है। जिससे बांसवाड़ा और अन्य भागों में सुती कपड़ा, कागज

सीमेंट आदि उद्योगों की स्थापना की जा रही है। यातायात और संचार तथा शिक्षा प्रसार भी बड़ रहा है। जिससे प्रदेश की जनसंख्या एवं नगरीय जनसंख्या बढ़ने की सम्भावना है।

यातायात के मार्गों का इतिहास पर प्रभाव :–

वागड़ के उबड़ खाबड़ धरातल, पहाड़ी क्षेत्रों, नदियों की घाटियों में और पहाड़ों की तलहटियों पर गाँव या नगर बसते जा रहे हैं। उन्हीं को जोड़ने वाली पगडंडियाँ सड़के और रेलें आदि गमनागमन के मार्ग निकले हैं। वागड़ प्रदेश में प्रवेश के वे ही पुराने मार्ग है जो आज भी विद्यमान हैं:–

1. उदयपुर–खेरवाड़ा–देवल–डूँगपुर–सागवाड़ा–गलियाकोट या डूगरपुर ईडर या डूँगरपुर बांसवाड़ा
2. उदयपुर–सलूम्बर–आसपुर–पीपलखूंट–बांसवाड़ा
3. बांसवाड़ा–कालींजरा–झालोद–दाहोद
4. डूंगरपुर–मोडासा–ईडर–अहमदाबाद
5. बांसवाड़ा–सौलाना–रतलाम–इन्दौर
6. बांसवाड़ा–प्रतापगढ़–मंदसौर

उपरोक्त मार्ग और सड़के प्राचीनकाल से ही आक्रान्ताओं के सैन्य संचालन, व्यापारी मार्ग, जैन और बौद्ध साधुओं और तीर्थ यात्रियों के मार्ग रहे हैं। इन मार्गों में बांसवाड़ा और रतलाम के बीच वीरपुर का घाटा (सैलाना का घाटा), डुँगरपुर और अहमदाबाद के बीच रतनपुर का घाटा आदि ऐतिहासिक एवं सुरक्षा की दृष्टि से बड़े महत्त्वपूर्ण रहे हैं। इन्हीं मार्गों से समय–समय पर मालवा के परमारों, सुल्तानों, गुजरात के सोलंकियों, मेवाड़ के सिसोदियों और मुगल सेनाओं तथा अंग्रेजी शासनकाल में फोजों ने आक्रमण किया। हर बार इन सब लोगों ने इन्हीं मार्गों से आक्रमण करके इन प्रदेशों पर आधिपत्य किया, लूटा, नष्ट किया और दण्ड अथवा खिराज वसूल की। अंग्रेजी शासन और स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् आवागमन, व्यापार बढ़ने के साथ–साथ यातायात के साधनों के साथ मार्गों का स्वरूप पगडंडियों से सड़के और राष्ट्रीय राजमार्गों में परिवर्तित हो गई। यहीं नहीं आन्तरिक भागों को भी सड़कों से जोड़ा गया है। वागड़ प्रदेश के भीतरी भागों में प्रवेश के

लिये मुख्य अवरोधक पहाड़ और पर्वतीय नाले रहे हैं। जो बरसात में चार महीनों तक इस प्रदेश के अधिकाश भाग को सभ्य संसार से अलग थलग कर देते थे। इनमें सबसे बड़ी अवरोधक वागड़ प्रदेश की सत्ततवाहिनी माही, अनास और हीरन नदी रही है। माही नदी को हजारों वर्षों से बाढ़ रहित दिनों में भी नावों से पार करना पड़ता था। अब इस पर पुल बन जाने से डुँगरपुर, बाँसवाड़ा और गुजरात से वर्षभर सम्पर्क स्थापित किया जा सका है। यद्यपि इतिहास में माही और सोम दोनों नदियाँ मेवाड़ डुँगरपुर तथा बाँसवाड़ा रियासतों के बीच सीमा का काम करती रही है। साथ ही दोनों राज्यों के राजनैतिक संबंध अच्छे नहीं होने से इनके उपर पुल का निर्माण नहीं हुआ। यहीं नहीं सम्पूर्ण वागड़ प्रदेश आर्थिक दृष्टि से इतना पिछड़ा हुआ था कि इतनी बड़ी नदी पर पुल या बांध यहाँ के सामंती शासकों की क्षमता से परे था। आजादी के बाद इन पर पूल बन गये हैं।

वागड़ प्रदेश के भीतरी भागों में प्रवेश व्यापार और प्राशसिनक दृष्टि से प्रमुख गाँवों कस्बों को जोड़ने के लिये अब पूल व सड़के बना दी गई है। संचार के साधनों से सभी बड़े–बड़े गाँवों को जोड़ा जा रहा है। वैसे डुँगरपुर से हिम्मतनगर अहमदाबाद को रेलमार्ग से आजादी के पश्चात् जोड़ दिया गया है। बांसवाड़ा और रतलाम को भी रेल्वें से जोड़ने की योजना बहुत पुरानी है। सर्वेक्षण हो चुका है लेकिन सरकार की क्या नीति रही है कि यह भाग अभी तक रेलमार्ग से नहीं जोड़ा गया है। डुँगरपुर और बाँसवाड़ा को रेल मार्ग से जोड़ देने पर वागड़ प्रदेश की चहुँमुखी प्रगति के अवसर खुल जायेंगे। वायु मार्ग की दृष्टि से बाँसवाड़ा में हवाई जहाज उतारने के लिये तलवाड़ा के निकट हेलीपेड बनवाया गया है लेकिन सतत सेवायें तो आर्थिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण क्षेत्र बनने पर ही हो सकता है।

वागड़ के आदिवासी और इतिहास :

आदिवासी और वागड़ पदेश एक दूसरे से प्रर्यायवाची है। आदिवासी वागड़ प्रदेश के मूल निवासी है, उनका इस क्षेत्र के मानव इतिहास के साथ प्रारंभ से ही संबंध रहा है। लेकिन इनकी अर्थ स्थायी संस्कृति और स्थानान्तरित अर्थव्यवस्था होने तथा इस क्षेत्र के मूल निवासी होते हुए भी इनका किसी भी प्रकार का इतिहास नहीं लिखा गया और न ऐतिहासिक महत्त्व ही रहा है। इस प्रदेश का लिखित रूप में जब ही आया तब भीलों को

अपनी स्वतंत्रता के रक्षक तो नहीं बताया बल्कि उन्हे लूटेरा और आतंककारी तथा निम्न कोटि का मानव बतलाया। जिससे उन्हें नगरों में रहने का कोइ अधिकार नहीं है। जिनका आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होना और राजनैतिक दृष्टि से अस्तित्व की मांग करना भी नीति संगत नहीं माना गया। यहीं नहीं उन्हें क्रूरता से दबाकर सागड़ी, हाली और गुलाम बनाकर रखना ही शासकों एवं सवर्ण लोगों ने नीति अपनाई। यहीं प्रवृति न केवल राजपूत शासकों की ही रही वरन् जितने भी बाहरी आक्रमण–कर्ता आये उन सबकी रही, जिनमें मरहठे, पिण्डारी बिलोची सिपाही और अंग्रेज मुख्य है। बांसवाड़ा राज्य की स्थापना ईसा पूर्व 490 वर्ष में आजादश द्वारा मानी जाती है। बाद में बांसवाड़ा में बांसिया भील (वाहिया चरपोटा) का साम्राज्य रहा इसके बाद मेवाड़ के गुहील वंश का शासन रहा। 13 वीं शताब्दि में राजा डूँगरिया भील ने डूँगरपुर को बसाया उसके बाद में मेवाड़ के गुहील वंश का आधिपत्य हो गया।

वागड़ के राजपूतों का ऐतिहासिक महत्त्व :

वागड़ के इतिहास में राजपूतों का महत्त्व उनके द्वारा बसाये गये नगरों एवं निर्माण कार्यों की दृष्टि से रहा हैं। इनमें सोलंकियों, परमारों गुहिलवंशियों, चौहानों और राठौड़ों का भी महत्त्वपूर्ण हाथ रहा है। गुहिलवंशियों ने तो 800 वर्षों तक वागड़ पर शासन किया। इस काल मे उन्होंने बांसवाड़ा, डुँगरपुर और कुशलगढ़ में भीलों को मारकर राजधानियाँ बनायी और महल बनाये। साथ ही तालाब और मन्दिर भी बनाये। परमारों ने पूर्वी क्षेत्र को विजय करके अर्थुना को उसकी राजधानी बनाया इसी तरह सोलंकियों ने बड़ौदा नगर बसाया जो डुँगरपुर राज्य की प्राचोन राजधानी गुहिलोत शासकों के समय में भी रही थी। चौहानों की राजधानी गलियाकोट थी, राठौड़ बाद में वागड़ में आकर बस गये जिन्हें समय–समय पर जागीरियाँ दी गई थी। वैसे गुहिलोत शासकों के लिये वागड़ प्रदेश के चौहान ''भड़किवाड़'' यानी रक्षक की तरह रहे हैं। इन गुहिलोत और सिसोदिया शासकों का संबंध सदैव मेवाड़ से रहा था। वे मेवाड़ की सेना में रहे। महाराणा उदयसिंह और महाराणा प्रताप के साथ मुगलों से लड़े लेकिन मुगलों के भी एक माने में सामंत बनकर रहे उसका कारण यह था कि वे भीलों से छीनी हुई भूमि पर शासन करते थे। अतः सदैव भीलों से भयभीत रहते थे और संकटकाल में किसी से सहायता मिलती रहे इसी भावना से मेवाड़ और दिल्ली तथा

अंग्रेजों के स्वामी भक्त बने रहे। इन्होंने किसी आक्रमणकारी के विरूद्ध सिर नहीं उठाया बल्कि उन्हें प्रसन्न रखने के लिये दण्ड, खिराज आदि देकर उन्हें विदा किया और समय मिलते ही स्वतंत्र होने की चेष्ठा की। इस तरह सिसोदियों ने सबल और समर्थ के साथ संधि करना और कमजोरों को कुचलने में ही अपना अस्तित्व माना। इनका अस्तित्व किन्हीं दो शक्तियों के बीच प्रभुसत्तात्मक शासकों का नही वरन् सीमान्त शासकों जैसा ही रहा है। यही इनका इतिहास रहा है।

वागड़ प्रदेश की अर्थव्यवस्था का इतिहास में महत्त्व

वागड़ प्रदेश के लोग राजस्थान में आर्थिक दृष्टि से सबसे गरीब और नीचा जीवन स्तर आज से नहीं सहस्त्राब्दियों से यापन कर रहे हैं क्योंकि यह प्रदेश अनपजाऊ उबड़ खाबड़ धरातल, अस्वास्थ्यकर जलवायु, आदिवासी जनसंख्या का घर रहा है। इसके अलावा अन्य कारण थे, सामंती शासन, प्राकृतिक संसाधनों का अभाव, अशिक्षा, पड़ोसी राज्यों से बेर, यातायात संचार के साधनों की असुविधा आदि सबही बातों का होने से केवल महला, मन्दिरों, तालाबों के अलावा सब ही प्रकार का निर्माण कला कौशल और आर्थिक विकास की उपेक्षा ही बरती गई। अतः सम्पूर्ण प्रदेश पूरे 2000 वर्षों के इतिहास में एकाकी, पिछड़ा हुआ ही रहा। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् संसाधनों का उपयोग, यातायात और संचार के साधनों का प्रसार एवं व्यापार बढ़ा और शिक्षा प्रसार हुआ है। नवीन उद्योगों की स्थापना की जा रही है। परिणाम स्वरूप लोगों का जीवन स्तर ऊँचा उठता जा रहा है। सामाजिक और सांस्कृतिक एकाकीपन समाप्त होता जा रहा है।

वागड़ प्रदेश में सामाजिक और राष्ट्रीय आन्दोलन :

पिछड़े हुए एकाकी और सामंती प्रशासन में रहने वाले प्रदेश में यथा राजा तथा प्रजा का सा ही समाज रहा था। राजा की भावनाओं के अनुकूल ही सामाजिक जीवन व्यतीत करना पड़ता था उसका विरोध करने वाले व्यक्ति को राजदण्ड का शिकार होना पड़ता था। न्यायिक दृष्टि से कितना ही अनैतिक हो उसकी अपील ईश्वर के दरबार में ही होती थी। राजा जिन समाज सुधारक प्रवृतियों के न्याय संगत समझता था वे ही क्रियान्विती हो सकती थी। परिणामस्वरूप रूढ़ीवादी परम्पराओं, धर्मान्धता का बोबाला रहा

है। इस दृष्टि से 18 वीं शताब्दि में मावजी बावजी का स्थान एक समाज सुधारक के रूप में सम्पूर्ण प्रदेश में बड़ा ही महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने भीलों और पिछड़ी जातियों में स्वच्छता और बुरी आदतों और कुप्रथाओं के त्याग का पाठ पढ़ाया वह आज भी उन लोगों के जीवन मे महती समाजसुधारक की भूमिका का निर्वहन कर रहो है। आज भी मावजी बावजी की साबला में गादी हैं जिसपर आदिवासी उतनी ही श्रद्धा से नतमस्तक होते है। मावजी का आन्दोलन केवल समाज सुधार के लिए ही था। संवत 1784 में जन्मे संत मावजी ने भील समाज के लिए धार्मिक सुधार एवं सामाजिक सुधार हेतु आन्दोलन चलाया था। उनक उपदेश ''चौपड़ा'' कहलाते हैं। उन्होंने अपने उपदेशों में जाति प्रथा का अन्त, मुद्रा का अवमूल्यन, राजतंत्र और जागीरदारी प्रथा का अंत, कागज़ी मुद्रा का प्रचलन, ब्रहामणों के एकाधिकार की समाप्ति की बात कहीं। उन्होंने निम्नजाति वर्ग के लोगों को मंदिर में प्रवेश दिया, पूजा का अधिकार दिया, महारास खेलने का अधिकार दिया। इससे नाराज अभिजात्य वर्ग ने महारावल शिवसिंह द्वारा गिरफ्तार करवाया गया लेकिन व्यसापक जनसमर्थन को देखते हुए उन्हें छोड़ दिया गया। 20 वीं शताब्दि में बाँसवाड़ा में गोविन्द गिरी का काम समाज सुधार के साथ–साथ राजनैतिक चेतना फूँकना भी था। उसमें दो बाते मुख्य थी एक सामाजिक कुरीतियों को मिटाना और आर्थिक दृष्टि से गरीब आदिवासियों को इसाई पादरियों द्वारा गरीबी का फायदा उठाकर इसाई धर्म में परिवर्तन करने से बचाना, साथ ही शासन के आतंक का विरोध तथा भीलों का अंग्रेजी सरकार की सेना में भर्ती न होने का प्रचार करना था। उसने राष्ट्रीय चेतना का संचार किया। मूलतः गोविन्द गिरी स्वामी दयान्द सरस्वती और महात्मा गांधी की समाज सुधारक और राजनैतिक विचारधाराओं से प्रभावित थे। इस पर इसाई पादरी अंग्रेजी हकूमत पर गोविन्द गिरी की प्रवृतियों पर रोक लगाने तथा बांसवाड़ा डूँगरपुर के अंग्रेजी हकूमत के वफादार सामंती शासकों ने गोविन्द गिरी का सामाजिक वर्चस्व समाप्त किये बिना अपने अस्तित्व की रक्षा करना असंभव माना। उसी के परिणाम स्वरूप सन् 1931 में गोविन्द गिरी को गिरफ्तार किया गया।

इतना दमन करने पर भी समाज सुधार और राष्ट्रीय चेतना दोनों ही प्रबल धाराओं को रोकने में न तो इसाई पादरी न अंग्रेजी और सामंती शासक दोनों ही समर्थ हो सकें। सन् 1931 से ही प्रजामण्डल की स्थापना सम्पूर्ण आन्दोल के प्रत्यक्ष रूप में राजनैतिक मोड़

दे दिया। जिसके परिणाम स्वरूप बांसवाड़ा, मध्यप्रदेश और गुजरात की सीमा पर मामा बालेश्वर दयाल, भूपेन्द्रनाथ त्रिवेदी, श्री हरिदेव जोशी और डूंगरपुर में श्री भोगीलाल पण्डया आदि ने आदिवासी सेवासंघ और आदिवासी छात्रवास की स्थापना करके स्वदेशी आन्दोलन तथा राजनैतिक चेतना का शंख फूँका और राष्ट्रीय सरकार और जनता की सरकार की मांग की जिसने राष्ट्रीय आन्दोलन में महती भूमिका निभाई उसी के परिणाम स्वरूप भारत की आजादी मिलने के साथ ही डूंगरपुर और बाँसवाड़ा राज्य राजस्थान राज्य और भारतीय गणतंत्र के अंग बन गये।

राष्ट्रीय चेतना फैलाने वाले लोग गोविन्द गिरी के शिष्य एवं प्रजामण्डल के कार्यकर्ता थे। वे समाज सेवा का व्रत लेकर सारे वागड़ प्रदेश में छा गये। उन्हीं की प्रेरणा से भीलों में सामंती आतंक एवं अंग्रेजी दासता से मुक्ति पाने का साहस का संचार हुआ जिसकें परिणाम स्वरूप समय–समय पर भीलों ने स्वतंत्रता प्राप्ति के लिये विदोह किये संगठन बनाये।

सारांश :

वागड़ प्रदेश प्राकृतिक बनावट की दृष्टि से धरातल की सबसे प्राचीन अरावली पहाड़ों की श्रृंखलाओं और घाटियों से घिरा हुआ उबड़ खाबड़ स्थल भाग हैं। उष्ण कटिबन्टीय अस्वास्थ्यकर जलवायु वाला यह धरातल वनाच्छादित और अन्य प्राणियों का घर रहा है। सांस्कृतिक दृष्टि से एकाकी और आर्थिक दृष्टि से अनुन्नत होते हुए भी इसका दो हजार वर्षों से अधिक पुराना इतिहास रहा है। क्षत्रियों, शकों, हूणों, वैशवंशी और प्रतिहार शासकों ने सदैव इस प्रदेश पर अपना आधिपत्य बनाये रखा। ईसा की छठो शताब्दि से मालवा, गुजरात मेवाड़ और दिल्ली के शक्तिशाली शासकों से घिरा हुआ होने से यह प्रदेश समय–समय पर इनके क्रोध साम्राज्य प्रसार की लिप्सा और राजनैतिक वर्चस्व का शिकार होता रहा है। मुगल और ब्रिटिश काल में इस प्रदेश के शासकों को दुहरी भमिका निभानी पड़ती थी। सभी आक्रान्ताओं ने वागड़ प्रदेश को लूटा महलों को तोड़ा, शासकों से अधिनता स्वीकार करवायी गयी लेकिन इस प्रकार सम्पूर्ण भूमि वालों में यहाँ के शासकों ने एक सीमावर्ती राज्य की तरह हवा की दिशा में बहकर अपना अस्तित्व

बनायेरखा। आजादी के पहले तक वागड़ प्रदेश के सभी शासकों ने यहाँ की 80% से अधिक आदिवासी जनसंख्या जिनका अपना कोई लिखित इतिहास नहीं है, जिसकी स्थानान्तरित अर्थव्यवस्था और अस्थाई आवास का फायदा उठाकर उन्हें क्रूरतापूर्ण ढंग से दबाये रखा। उनके साथ गुलामों सा व्यवहार किया। उन्हे द्वितीय श्रेणी के नागरिकों से भी नीचा माना यही नहीं जब–जब भी इन आदिवासियों ने क्रूरता और आतंक के विरूद्ध संघर्ष किया इन शासकों ने इन्हें नृशंसता पूर्वक कुचलकर दम लिया। इतना ही नहीं उन्हें सदैव एक आदिम संस्कृति प्रतीक ही माना। उसी का परिणाम है कि वागड़ प्रदेश 20 वीं सदी में भी आर्थिक दृष्टि से पिछड़ा हुआ, सामाजिक दृष्टि से एकाकी जीवन बीताने वाला, राजनैतिक दृष्टि निम्न कोटि का नागरिक का सा अशिक्षित और असहाय दिखाई पड़ रहा है। आजादी मिलने पर इस क्षेत्र में आर्थिक परिवर्तन आये यहाँ के नागरिकों को सभ्य समाज के नागरिकों का सा जीवन जीने के अवसर उपलब्ध होने लगे। शिक्षा, चिकित्सा, यातायात संचार की सुविधाएँ उपलब्ध होने लगी। न्याय प्राप्त होने लगा और आर्थिक विकास के साथ जीवन स्तर भी ऊँचा उठाने के लिये सिंचाई के साधनों, कृषि विकास, नए उद्योगों की स्थापना आदि कार्य होने लगे। जिससे इस वागड़ प्रदेश का प्राकृतिक स्वरूप सांस्कृतिक प्रदेश में बदल रहा है। इसीलिए वागड़ प्रदेश का सम्पूर्ण सांस्कृतिक इतिहास भूगोल की पृष्ठ भूमि पर आधारित है। यहीं वागड़ प्रदेश का ऐतिहासिक भूगोल है।

संदर्भ ग्रन्थ

1. जमनालाल दशोरा – मेवाड़ राज्य का एतिहासिक भूगोल, ''भूमा'' राजस्थान विद्यापीठ 1973
2. जी. टेलर – ज्योग्राफी इन टवण्टियेथ सेंचुअरी
3. एम. एस. पाण्डेय – हिस्टोरिकल ज्याग्राफी ऑफ टोपोग्राफी ऑफ बिहार
4. डॉ. के. एन. मुंशी – हिस्ट्री एण्ड कल्चर ऑफ इण्डियन पिपूल खण्ड–1 पृष्ठ (57)
5. डॉ. गौरीशंकर हीराचन्द्र ओझा – डूँगरपुर, बांसवाड़ा राज्य का इतिहास
6. जमना लाल दशोरा – राजस्थान में अकालों का भूगोल योजना, राजस्थान भूगोल परिषद
7. राजस्थान भूगोल परिषद
8. योजना, राजस्थान पत्रिका
9. भारत सरकार – जनगणना रिपोर्ट – 2011
10. डॉ. हरिमोहन सक्सेना राजस्थान का भूगोल 1944
11. डॉ. लोढा एवं माहेश्वरी – राजस्थान का भूगोल
12. प्रो. एच.एस शर्मा – राजस्थान का भूगोल